Q. 2 महात्मा गाँधी द्वारा प्रतिपादित राज्य संबंधी विचारधारा

Ans: — महात्मा गाँधी को साधारण राजनैतिक दार्शनिकों की कोटि में नहीं रखा जा सकता। उनकी कोई भी रचना स्वतंत्र राजनीतिक दर्शन पर नहीं लिखी गई। गाँधी ने यथार्थ राज्यों का अध्ययन करके उनकी कमियों को बताया है, भारत के संदर्भ में एक अहिंसात्मक राज्य की स्थापना का चित्र खींचा है। इस दृष्टि से वे यथार्थ राज्यों के वर्तमान स्वरूप का विश्लेषण करते हैं जो पश्चात्य देशों के कुछ चिंतकों की कल्पना के भाँति एक स्वप्नलोकी आदर्श राज्य कहा जा सकता है।

* 1 राज्य के प्रति अराजकतावादी दृष्टिकोण :

सामान्यतया राज्य के प्रति गाँधी जी का दृष्टिकोण अराजकतावादी है। उन्हें टॉलस्टाय की तरह दार्शनिक अराजकतावादी की श्रेणी में रखा जा सकता है। वे राज्य को मानव की दुर्बलता की उपज मानते हैं। मार्क्स एवं एंजिल ने अपने युग के राज्यों को एक वर्गीय संगठन माना जिसका उद्देश्य एक वर्ग द्वारा दूसरे का शोषण करना था। गाँधी जी ने राज्य को वर्ग संगठन न कहकर हिंसा का केन्द्रीय एवं संगठित रूप कहा है। उनके मत से ऐसा राज्य 'आत्मा विहीन यन्त्र' के तुल्य है। गाँधी जी ने लिखा "मेरे लिए राजनैतिक सत्ता साध्य नहीं है बल्कि वह मानव की उन्नति के प्रत्येक क्षेत्र में एक साधन मात्र है। एक आदर्श समाज में न कोई राज्य होगा न राजनीतिक सत्ता।"

इस दृष्टि से गाँधी अराजकतावादी हैं तथा मार्क्स की भाँति एक राज्य विहीन समाज की व्यवस्था को एक आदर्श राज्य मानता है। लेकिन मार्क्स के हिंसात्मक साधन के वे कट्टर विरोधी हैं। उनकी धारणा यह है कि

राज्य अहिंसा की राजनीतिक अभिव्यक्ति का साधन है। गाँधीजी ने जिस आदर्श समाज व्यवस्था की कल्पना की है, वह उनके दार्शनिक अराजकतावादी विचारों पर आधारित होगी। इसे उन्होंने रामराज्य का नाम दिया है। गाँधी जी राज्य की आन्तरिक प्रभुसत्ता की धारणा के विरोधी हैं क्योंकि यह सत्य को यह न तो प्लेटो के रिपब्लिक में चित्रित आदर्श राज्य के सदृश्य है, और न ही हीगेल की धारणा का पृथ्वी पर ईश्वर का प्रमाण है क्योंकि निरंकुश राज्य में परिणत हो जाए। गाँधी का आदर्श राज्य पृथ्वी में ईश्वर का अस्तित्व रखने वाली संस्था का रूप है।

गाँधी जी राज्य की आन्तरिक प्रभुसत्ता की धारणा के विरोधी हैं, क्योंकि यह राज्य को एक केन्द्रीकृत संगठन के रूप में परिणत कर देता है, जिसमें सत्ता थोड़े से विशेषज्ञों के हाथों में केन्द्रित हो जाती है, और वे हिंसात्मक साधनों द्वारा सत्ता का प्रयोग करते हैं। इसके विपरीत गाँधी जी की धारणा का राज्य ऐसी विकेन्द्रीकृत सामाजिक व्यवस्था है, जिसमें जीवन स्वनियंत्रित तथा स्वनियमित होगा।

गाँधी जी के अनुसार आदर्श राज्य वह समाज है जिसमें छोटे-छोटे जनसमूह ग्रामों में निवास करते हैं, और उनके संगठन तथा शान्तिपूर्ण अस्तित्व को मुख्य शर्त ऐच्छिक सहयोग की होती है। इन छोटे-छोटे स्वशासित जनसमूहों के क्षैतिज संगठन द्वारा प्रांतीय और राष्ट्रीय राज्यों का अस्तित्व होगा। ऐसे राज्य स्वयं साध्य न होकर व्यक्ति के जीवन के विभिन्न क्षेत्रों में उसे पूर्ण विकास प्रदान करने का साधन होगा।

गाँधी जी जिस आदर्श रामराज्य की कल्पना करते हैं, वह एक विशुद्ध लोकतंत्री व्यवस्था है। उसकी आधारभूत धारणायें व्यक्तिगत स्वतंत्रता समानता तथा सामाजिक न्याय हैं। गाँधी की लोकतंत्र की धारणा पाश्चात्य देशों में प्रचलित धारणा के सदृश नहीं है। वे केन्द्रीकृत शासन व्यवस्था को लोकतंत्र का निषेध मानते हैं।

गाँधी पाश्चात्य ढंग के संसदीय लोकतंत्रों के विरोधी है, जो दलगत आधार पर प्रतिनिधित्वात्मक ढंग से संगठित तथा संचालित होते है। उसकी सबसे बड़ी दुर्बलता यह है कि उसमें केन्द्रीकरण की प्रवृत्ति बनी रहती है। जनता को प्रत्याशियों के लिए मतदान करने का मौका तो मिलता है, पर शासन संचालन के लिए किसी अन्य कार्य में भाग लेने का अवसर नहीं मिलता। बहुसंख्यक मतदाताओं का समर्थन पानेवाला प्रत्याशी समस्त जनता का वास्तविक प्रतिनिधि नहीं रह सकता। संसदों में जिस राजनीतिक दल के प्रत्याशी बहुसंख्यक हो जाते है, उसी दल के हाथों में राजनीतिक सत्ता आ जाती है। यह लोकतंत्र नहीं है।

गाँधी जिस राम राज्य की बात करते है, उसके अंतर्गत लोकतंत्र को समाहित किया गया है। उनका लोकतंत्र के बारे में यह कल्पना है कि उसमें सर्वाधिक शक्तिमान व्यक्ति को जो अवसर प्राप्त होते है, वे निर्बल व्यक्ति को भी प्राप्त हो।

गाँधी जी की धारणा आदर्श राज्य है। स्वराज ग्रामीण गणतंत्रों की संघात्मक व्यवस्था है। यह विकेन्द्रीकरण की व्यवस्था है। ऐसी व्यवस्था में ग्राम का प्रत्येक व्यक्ति जनसमूह के सार्वजनिक मामलों में सक्रिय भाग लेगा। इस पंचायत की अपनी कार्यपालिका व्यवस्थापिका तथा न्यायपालिका होगी। गाँधी जी ने कहा कि "केन्द्र में बैठे बीस व्यक्ति लोकतंत्रों को कार्यान्वित नहीं कर सकते। लोकतंत्र का कार्यान्वन नीचे से प्रत्येक गाँव के लोग द्वारा किया जायेगा।

गाँव //

प्रत्येक गाँव एक आत्म निर्भर जनसमूह होगा। वह अपनी सामान्य आवश्यकताओं की पूर्ति के लिए पड़ोसियों पर निर्भर नहीं रहेगा। पारस्परिक निर्भरता स्वभाविक है। प्रत्येक गाँव प्रत्येक गाँव अपने कुएँ चौपाल कला मनोरंजन स्थल चारागाह प्रारंभिक पाठशाला जलाशय आदि की व्यवस्था व प्रबंध स्वयं करेगा। गाँव के लिए कृषि योग्य भूमि से उत्पादन इतना हो